eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

रामायण एवं महाभारत काल में नारियों की सामाजिक स्थिति : तुलनात्मक अध्ययन

[1]डा0 कान्ती शर्मा

[1]एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिरसागंज, फिरोजाबाद।

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018 ; Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

प्रस्तुत लेख में रामायण और महाभारत काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विवेचन है। लेख में नारियों की महत्ता को स्पष्ट करने के लिए यथा स्थान रामायण और महाभारत काल से पूर्व के वृतान्तों को उदाहरण सहित स्पष्ट किया गया है । प्रस्तुत लेख में रामायण तथा महाभारत काल की नारियों की सामाजिक स्थिति का वर्णन है। नारियों की महत्ता को स्पष्ट करते हुए वैदिक काल की नारियों /पुत्रियों को हेय दृष्टि से देखा जाता था महाभारत काल में पुत्र को परिवार का भविष्य तथा पुत्री को कष्ट का कारक बताया गया है। हालांकि महाभारत काल में पुत्रियों का लक्ष्मी का वास भी बताया गया है। रामायण काल में कन्या को शुभ माना गया है। पुरातन काल में कन्या शिक्षा का प्रावधान जिसमें दो कोटियों का उल्लेख यथा स्थान वर्णित है– साहबोवधू, वृहमवादिनी। नारियां आचार्या शब्द से संबोधित की जाती थीं। मंदिरों तथा विवाह के समय नारियों को दहेज में दिये जाने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। नारियों के शासन कार्यों में भूमिका के भी पुष्ट प्रमाण हैं। रामायण तथा महाभारत काल में नारियां पूर्ण योवनावस्था को प्राप्त करने के बाद ही पिता की स्वीकृति के साथ दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करती थी। विवाह पद्धतियों में चाहे प्रणय विवाह हो या गंधर्व विवाह। रामायण काल में दहेज प्रथा का विवरण दशरथ तथा राम के विवाह के समय प्राप्त होता है। लेख में यथा वर्णित है।

महाभारत विवाह पूर्व कुमारावस्था में भी प्रजनन के प्रमाण उपलब्ध जैसे कुन्ती और मत्स्यगंधा। महाभारत में अपहरण रीति से विवाह पद्धति का उल्लेख जिसमें सुभद्र तथा अम्बा के उदाहरण प्रमुखता से उपलब्ध हैं। महाभारत काल में स्वच्छंद विहारिणी महिलाओं के प्रमाणों का उल्लेख लेख में इनका उल्लेख किया गया हैं। लेख से स्पष्ट है कि रामायण तथा महाभारत काल में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी। कहीं कहीं नारियों के साथ पुत्रों के सापेक्ष भेदभाव किया गया। फिर भी महिलाओं ने विभिन्न भूमिकाओं का बखूबी निर्वहन किया महाभारत में पति–पत्नी प्रधान कुटुम्बों के साथ सती प्रथा का भी उल्लेख है। लेख को विभिन्न सन्दर्भो द्वारा प्रमाणित किया गया है जो लेख की मौलिकता का परिचायक है।

महत्वपूर्ण शब्दावली :– साहवोवधू, वृहमवादिनी, प्रणय विवाह, गन्धर्व विवाह, प्रभूत कन्याधन, अचिन्त्य हृदया, पति सम्मानिता, विकम्पित।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

प्रस्तावना :– प्रस्तुत लेख रामायण काल तथा महाभारत काल में नारियों की सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित है। लेख में नारियों की शिक्षा तथा दाम्पत्य सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है । लेख का अध्ययन रामायण तथा महाभारत काल की नारियों की परिवार तथा समाज में भूमिका और उनका गृह तथा परिवार में सम्मान , धार्मिक प्रबन्धों में उनकी भूमिका तथा नारियों की शासन कार्यों में उनकी भूमिका को लेख के अध्ययन में समायोजित किया गया है । रामायण एवं महाभारत के काल में नारियों की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए वैदिक युग में उनकी स्थिति को स्पष्ट किया जाना अनिवार्य है अतः लेख में तात्कालिक नारियों की स्थिति को यथास्थान उदाहरण सहित स्पष्ट किया गया है।

पुरातन नारी और उसकी स्थिति :–

संभवे स्वजनदुःखकारिका, सम्प्रदान समर्थ्यहारिका।

योवनोयपि बहुदोषकारिका, दारिका, हृदयदारिका पितुः ।।

यह श्लोक सिद्ध करता है कि वैदिक काल में पुत्रियों को बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाता था, क्योंकि प्रत्येक अवस्था में पुत्री किसी न किसी प्रकार कष्ट ही प्रदान करती थी। जन्म के समय स्वजनों को, विवाह के समय अर्थहरण करने से, परिवार को यौवन काल में बहुत दोष से युक्त होन से पुत्री पिता –माता के लिए विदारक होती थी।

आत्मा पुत्र सखी भार्या कृछृहि दुहिता नृणम।

महाभारत काल में कहा गया है कि ''जहां पुत्र परिवार का भविष्य होता है, वहीं पुत्री कष्टकारक होती है''। [1]

कन्या पित्रत्वं दुखंहि सर्वेषां मानकादक्षिणाम्।

रामायण काल में वर्णित है सुमलि ने बताया है कि कन्या का पिता होना दुःख का कारण है, क्योंकि ज्ञात नहीं कौन और कैसा पुरूष कन्या का वरण करेगा। [2]

नित्यं निवसत लक्ष्मिः कन्यकासु प्रतिष्ठता।

महाभारत में कहा गया है कन्या में नित्य लक्ष्मी का वास होता है। [3]

रामायण काल में वर्णित है कि मांगलिक अवसरों पर कन्या की उपस्थिति शुभ मानी जाती थी तभी राजमहल में रखीं जाती थी तथा राजा के पास मंगल के लिए तथा स्पर्श करने योग्य सामग्रियां जे जातीं थीं।

कन्या शिक्षा :– पुरातन काल में बालक और बालिका दोनों के उपनयन संस्कार के महत्व को स्वीकार किया गया है वैदिक साहित्य का दोनों ही अध्ययन करते थे। शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्या की दो कोटियां थीं। 'साहवोवधू तथा वृहमावादिनी' ।[4] साहवोवधू एक नियत अवधि तक शिक्षा प्राप्त कर ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करतीं थी। वृहमावादिनी स्त्रियां आजन्म अध्ययन करती रहती थीं। प्रारम्भिक शिक्षा

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

पिता के घर होती थी।[5] परन्तु उच्चशिक्षा गुरूकुलों में होती थी। उत्तर राम चरितमानस में एतरीय का लव और कुश के साथ, मालती माधव में कामान्दकी का भूर्खसू एवं देवराट के साथ शिक्षा ग्रहण करने का वर्णन मिलता है। किन्तु अलग बालिका शिक्षा की व्यवस्था भी थी । पाणिनी के अनुसार इनके आवास की अलग व्यवस्था थी।[6]

नारियां आचार्या शब्द से सम्बोधित कीं गयी तथा शिक्षक की तरह कार्य कने के प्रमाण हैं इसलिए मैत्रेयी, गार्गी आदि दर्शन में युगविश्रित रहीं ।[7]

प्राचीन साहित्य में स्त्रियों के नृत्य करने के उल्लेख प्राप्त होते हैं। देवताओं की प्रसन्नता के लिए नारियां मन्दिर में दान की जाती थीं। कालिदास के मेघदूत में लिखा है कि संध्या प्रार्थना के लिए उज्जयिनी के महाकाल मन्दिर में नर्तकियों को दान दिया गया । [9]

सामरिक कार्यों में महिलाओं की सहभागिता :–

आत्मा हि दारा सर्वेषां दारात्यंग्र वर्तिनाम।

आत्मेवमिति रामस्य पालियिष्यति मेदीनीम।

रामायण काल में स्त्रियों के शासन करने के प्रमाण उपलब्ध हैं। रामायण में यह प्रस्ताव किया गया कि राम को वनवास दिया जाता है, तो सीता को साम्राज्य का भार सौंपा जाना चाहिए।[10]

आत्मेवमिति रामस्य पालष्यिति मेदिनीम।

रामायण में दूसरे स्थान पर इस प्रसंग की पुष्टि होती है कि राम वनगमन के समय एक बार यह भी प्रस्ताव हुआ कि राम वन जाएं पर सीता अयोध्या में शासिका रहेंगी।[11]

रामायण में उल्लेख है कि पति के शासनकाल में स्त्रियां भाग लेतीं थीं। रावण को सबसे समुचित मंत्रणा मन्दोदरी ने ही दी कि सीता को लौटाकर राम से मैत्री करें। महाभारत काल में दुर्योधन को उसके युद्ध के निश्चय से डिगाने का कार्य गांधारी को सौंपा गया था। चालुक्य राजा चन्द्रादित्य की रानी विजय भट्टारिका पति के जीवित रहते ही आधुनिक दक्षिणी बम्बई के एक भाग पर शासन करती थी। अजन्ता की गुफा के भित्ति चित्र में दरबार में राजा और रानी एक साथ बैठे हैं। पर्शियन वेषभूषा में कोई विदेशी राजदूत भी चित्र में उपस्थिति है। इससे स्पष्ट होता है कि नारियां सामाजिक परिवेश में मजबूत तथा शासन में सम्मानित भूमिकाओं का निर्वहन करती थीं।

नाराज जनवदे उद्यानानि समागतः ।

सायंहने की कीडितु यांति कुमार्यो हेम भूषिता।

रामयण काल में संध्याकार्य में परायण सीता का सुशिक्षता होना स्वाभाविक ही है। कौशल्या के मंत्र सहित आहुति देने से [12] तथा तारा के स्वस्ति वायन से प्रकट होता है कि नारी को वैदिक कर्मकाण्ड की शिक्षा प्रदान की जाती थी। रामायण काल में संध्या समय कन्याएं अपनी सखियों से वार्तालाप और क्रीडादि के उपवन में जाती थी।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

रामायण काल में नारियों की वैवाहिक स्थिति :–

रामायण में सीता का विवाह पति संयोग सुलभावस्था में ही हुआ था। [13] अर्थात् विवाह की अवस्था पूर्ण योवनावस्था थी। रामायण काल में कन्या को पति वरण में पूर्ण स्वीधनता प्राप्त नहीं थी। अर्थात् विवाह के लिए पिता की आज्ञा आवश्यक थी। सभ्रांत आर्य परिवारों में प्रणय व गंधर्व विवाह का संकेत रामायण में प्राप्त होता है, किन्तु इस प्रकार के विवाहों के लिए भी पिता की स्वीकृति अनिवार्य थी।[14]

रामायण काल में नवदम्पति वर वधू के रूप में प्रवेश करते थे। विवाह के समय दहेज प्रथा भी समाज में विद्यमान थी। परिवर्ती समाज में दहेज प्रथा ने अपना कुत्सित रूप धारण कर लिया है। तत्कालीन रामायण काल में सीता के विवाह में राजा जनक ने प्रभूत कन्याधन दिया था। राम को सुन्दर दासियां भेंट की गयी थीं।[15] रामायण काल का दूसरा प्रमाण मंथरा है जो कैकेयी की दासी थी जिसे कैकेयी के पिता दशरथ को प्रदान की थी अर्थात् मंथरा कैकेयी के साथ उनके पिता के घर से आयी थी।[16]

रामायण में नारी निन्दा के प्रसंग :– रामायण काल में नारी निन्दा की निदर्शनभूत उक्तियां प्राप्त होती है। अगस्त्य और दशरथ नारी की निन्दा करते हैं।[17] कौशल्या नारी स्वभाव की निन्दा करती है। उनके अनुसार दुष्टा नारी सुख भोग करके आपत्तिकाल में पति का साथ छोड़ देतीं है। उसका कुल, उपकार, विद्यादान आदि कुछ भी उसे इस कुवृत से विलग नहीं कर सकते है क्योंकि वह 'अचिन्त्य हृदया' होती है।[18] रामायण में सीता को 'पति सम्मानिता' कहा गया है। यज्ञ यज्ञादि में पत्नी को अर्धांगिनी भी कहा गया है। सीता के अभाव में अश्वमेध यज्ञ में राम को सीता की स्वर्ण प्रतिमा रखनी पड़ी थी।

रामायण में नारी का दृड़ स्वभाव :– रामायण काल में एक वर्ग नारी जाति से तपोवन में निवास करने वाला भी रहा जिसमें अत्रि की पत्नी अनुसूइया, राम की पत्नी सीता, शबरी तथा स्वयंप्रभा का प्रमाण नारी के उत्तम आत्मबल को प्रमाणित करता है। रामायण का अध्ययन करने यह विदित होता है कि प्रत्येक नारी के जीवन में बाहय एवं आन्तरिक व्यवधान उपस्थित होते थे किन्तु अपने धैर्य से विकम्पित होकर दृड़ता से डटकर अंत में जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लेतीं है।

महाभारत काल में नारी की स्थिति :–

'' नित्यं निवसते लक्ष्मी कान्यकासु प्रतिष्ठता''।

महाभारत के आख्यानों के आधार पर प्रतीत होता है कि पुत्री को लक्ष्मी का वास स्थान मानते हुए भी परिवार में पुत्र को अपेक्षाकृत अधिक महत्व प्राप्त होता है।[19]

आत्मा पुत्रः सखी भार्या कृच्छ्र तु दुिहिता नृणाम ।

पुत्र परिवार की आशाओं की सफलताओं का प्रतीक था और पुत्री उसकी चिन्ताओं का संवर्धन करने वाली है।[20]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

किन्तु वस्तु स्थिति यह है कि कन्या कभी भी माता –पिता का अपकार नहीं करती जबकि पुत्र पितृवध तक कर डालता है। महाभारत में कुन्ती और लोपामुद्र की कथाएँ इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि कन्या अपने पिता की संकट से रक्षा करती है।

शांता एवं कुन्ती की क्रीडा का वर्णन महाभारत में प्राप्त होता है।[21] इससे यह स्पष्ट होता है कि महाभारत काल में कन्याओं की शिक्ष –दीक्षा का प्रमाण मिलता किन्तु वैदिक काल से चली आ रही परम्परा के आधार पर महाभारत में सार्वजनिक कन्या शिक्षा के पोषक प्रमाण प्राप्त नहीं होते है।

महाभारत काल में वैवाहिक जीवन के उपरान्त ही प्रजनन की बात प्रचलित थी किन्तु अपवाद स्वरूप कुमारावस्था में भी सन्तानोंत्पत्ति के प्रमाण मिलते हैं। कुन्ती ने कुमारावस्था में ही कर्ण को जन्म दिया तथा मत्स्यगंधा ने कुमारि रूप में ही व्यास को जन्म दिया। 'यत्र नार्यः कामचारा भवन्ति ' महाभारत में विचित्र वैवाहिक परम्परा के प्रचलन के प्रमाण भी प्राप्त होते है। उत्तर कुरू तथा महिष्मती में विवाह की प्रथा न होकर नारियॉ स्वच्छंद विहारिणी थी।

क्षत्रियाणां तु वीर्येण प्रशस्तं हरणमं बलात् ।

अतः प्रसहय हृतवान कन्यां धर्मेण पाण्डव।।

महाभारत काल में प्रत्येक कन्या का विवाह अवश्यम्भावी थी विवाह सामाजिक बंधन के साथ धार्मिक बंधन भी समझा जाता था महाभारत काल में विवाह की एक और प्रथा अपहरण का प्रचलन था नारी का अपहरण उस समय धर्म सम्मत था । इसी प्रथा का अनुसरण कर अर्जुन सुभद्रा का अपहरण कर लाये थे जो उनकी धर्मपत्नी कहलायी। भीष्म ने काशी नरेश को पराजित कर उसकी पुत्री अम्बा का अपहरण अपने भाई विचित्रवीर्य की वधू बनाने के लिए किया था। किन्तु भीष्म ने अपहृता नारी अम्बा को मद्रराज से विवाह करने के लिए स्वन्त्र कर दिया था।

उलूपी और चित्रांगदा नाग कन्याएं, सरमा सर्प जाति की जन्या, देवयानी ब्राहमणी, शर्मिष्ठा राक्षस कन्या इन सबका विवाह स्वजाति में नहीं हुआ था । जामबन्ती ऋक्षराज जाम्बवन की कन्या का वरण कृष्ण ने किया था का प्रमाण भी महाभारत में मिलता है। महाभारत काल में कुछ स्त्रियॉ अपवाद स्वरूप आध्यात्मनिष्ठा से मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होकर मुनिव्रत धारण कर लेती थी।[22]

महाभारत में स्वयं वर प्रथा के उल्लेख के साथ द्विवर प्रथा का एक विशेष विषय है। द्विवरः (देवर) का विश्लेषण है– ''द्वितीयोवरः द्विवरः''। कुन्ती द्रोपदी आदि नारियां द्विवर का उदाहरण हैं।

महाभारत काल में पारिवारिक दृष्टि से पत्नी प्रधान एवं पति प्रधान दोनों प्रकार के कुटुम्बों का वर्णन है। महाभारत के गृहिणी ही घर कहलाती है, गृहिणी के बिना गृह अरण्य से भी निकृष्ट एवं निर्जन प्रती होता है। 'गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्चते। गृहं तु गृहिणीहींनं कान्तारादतिरिच्यते।। [23]

स्त्री का पत्नी रूप में सम्मान अपेक्षित था। पत्नी के अप्रिय कहने पर भी बुद्धिमान उसे कटु वचन न कहे तथ प्रेम– प्रीति और धर्म का अचरण करे। अप्रियोक्तोयपि दाराणां न ब्रूयादप्रियं वुधः। रतिं प्रीतिं च धर्म च तदायतवेक्ष्य च।।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

महाभारत काल में नारी के पत्नीत्व की चर्चा अनेक प्रसंगों उपलब्ध है। मातृत्व तो वस्तुतः नारी का आभूषण है और इससे महाभारत की नारियॉ वंचित नहीं रहीं। ' तदा स वृद्धोभवति तदा भवति दुःखितः। तदा शून्यं जगत्तस्य यदा मात्रा वियूज्यते।। सामाजिक एवं धार्मिक आधारों पर वंचित नारी भी अपने मातृत्व पद से अलग नहीं होती थी। शिशु या पुत्र उसे परित्यक्ता नहीं बनाता था अपितु पिता से भी अधिक माता का सम्मान करता था। मातृविहीन व्यक्ति ही वार्धक्य, दुःख और संसार की निःसारिता का अनुभव करता था।[24]

अहमेवानुयास्यामि भर्तारमपलापिनम्। न हि तृप्तामि कामानां ज्येष्ठा मामनुमन्यताम्।। वर्तेयं न समां वृत्तिं जात्वहं न सुतेषुते। महाभारत में सती प्रथा के पुष्ट प्रमाण प्राप्त होते है। यद्यपि उनके ऐतिहासिक क्रम और समय का प्रामाणिक उत्तर नहीं दिया जा सकता, तथापि किसी भी समय की परिस्थिति का परिचायक तो उन्हें मानना ही पड़ेगा। माद्री के सती होने का उल्लेख मिलता है। अनेक ऋषि मुनियों के मना करने पर भी माद्री अपने हठ से विचलित न हुई ।[25]

महाभारत की नारियों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान गान्धारी और कुन्ती का है । गान्धारी एक आदर्श पत्नी के रूप में है कुन्ती मातृत्व की गरिमा से गौरवान्वित है। गान्धारी की नैतिक नियमों में पूर्ण श्रद्धा थी। जीवन की भयावह परिस्थितियों में भी उन्होंने सुकुचित स्वार्थ भावना को छोड़कर अपने गुणशील धर्म का पालन करती थीं। तथा यह आशा करती थीं कि अन्य भी धर्म का पालन करें।

कुन्ती का चरित्र महाभारत में धैर्य, क्षमा, सहनशीलता तथा आत्म त्याग का ज्वलंत उदाहरण है। पति परायण कुन्ती अपने पति पाण्डु के साथ हिमालय पर रहीं । कुन्ती के चरित्र में एक स्थान पर दोष भी परिलक्षित होता है और वह है कुरूक्षेत्र युद्ध की समाप्ति पर कर्ण से मिलन।

द्रौपदी का चरित्र महाभारत में पूर्ण मानवीय है। जहां एक ओर उनमें सौन्दर्य, धैर्य और त्याग वहीं गर्व की घृणा भी । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में द्रौपदी ने उच्च से उच्च और निम्न से निम्न व्यक्तियों के भोजन का समुचित प्रबन्ध किया था। एक स्वामिभक्त पत्नी की भॉति वे पॉण्डवों के साथ वन–वन भ्रमण करती रहीं और अज्ञातवास मेकं उनके साथ रहीं।

मूल्यांकन :–प्रस्तुत लेख में रामायण तथा महाभारत काल की नारियों की सामाजिक स्थिति का वर्णन है। नारियों की महत्ता को स्पष्ट करते हुए वैदिक काल की नारियों /पुत्रियों को हेय दृष्टि से देखा जाता था महाभारत काल में पुत्र को परिवार का भविष्य तथा पुत्री को कष्ट का कारक बताया गया है। हालांकि महाभारत काल में पुत्रियों का लक्ष्मी का वास भी बताया गया है। रामायण काल में कन्या को शुभ माना गया है। पुरातन काल में कन्या शिक्षा का प्रावधान जिसमें दो कोटियों का उल्लेख यथा स्थान वर्णित है– साहबोवधू, वृहमवादिनी। नारियां आचार्या शब्द से संबोधित की जाती थीं। मंदिरों तथा विवाह के समय नारियों को दहेज में दिये जाने के प्रमाण प्राप्त होते हैं । नारियों के शासन कार्यों में भूमिका के भी पुष्ट प्रमाण हैं। रामायण तथा महाभारत काल में नारियां पूर्ण योवनावस्था को प्राप्त करने के बाद ही पिता की स्वीकृति के साथ दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करती थी। विवाह पद्धतियों में चाहे प्रणय विवाह हो या गंधर्व विवाह। रामायण काल में दहेज प्रथा का विवरण दशरथ तथा राम के विवाह के समय प्राप्त होता है। लेख में यथा वर्णित है । महाभारत विवाह पूर्व कुमारावस्था में भी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 01, Jan 2018

प्रजनन के प्रमाण उपलब्ध जैसे कुन्ती और मत्स्यगंधा। महाभारत में अपहरण रीति से विवाह पद्धति का उल्लेख जिसमें सुभद्र तथा अम्बा के उदाहरण प्रमुखता से उपलब्ध हैं। महाभारत काल में स्वच्छंद विहारिणी महिलाओं के प्रमाणों का उल्लेख लेख में इनका उल्लेख किया गया हैं। महाभारत में पति–पत्नी प्रधान कुटुम्बों के साथ सती प्रथा का भी उल्लेख है। लेख को विभिन्न सन्दर्भो द्वारा प्रमाणित किया गया है जो लेख की मौलिकता का परिचायक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. महाभारत 1/173/10
2. रामायण 7/9/91
3. महाभारत 13/11/14
4. रामायण 2/16/9
5. वाल्मीकि रामायण (राम के वन गमन के समय सीता विवरण)
6. पाणिनि 6/2/86
7. महाभारत 1/1/38/712
8. पद्म पुराण, सृष्टिखण्ड 52/917
9. मेघदूत 135
10. रामायण 2/37/38
11. रामायण 2/37/381
12. रामायण 6/128/38
13. रामायण 2/119/134
14. रामायण 7/80/9–12
15. रामायण 7/39/20–31
16. रामायण 2/7/1
17. रामायण 3/13/5–7
18. रामायण 2/39/20–31
19. महाभारत 13/11/14
20. महाभारत 1/173/10
21. महाभारत 5/93/63
22. महाभारत 12/325/103
23. महाभारत 12/144/6
24. महाभारत 13/268/30
25. महाभारत 1/38/71–2